श्रावण पुत्रदा एकादशी — चयनित पूर्ण कथा का पुनर्कथन

Shravana Putrada Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — complete chapter 55, controlling revision 336436. Also compared: Wikisource revision API — complete controlling wikitext; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — adaptation licence; Wisdomlib Sanskrit chapter 55 — full electronic comparison; Wisdomlib / N. A. Deshpande chapter 55 — whole English comparison only; prose not copied; Wikisource rightsinfo — site-wide CC BY-SA 4.0 reuse basis.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.55.1–44, Sanskrit Wikisource revision 336436, not a transcription of the original text.

महीजित की चिंता और लोमश से भेंट

KATHA 6.55.1–17

युधिष्ठिर मधुसूदन से श्रावण शुक्ल एकादशी का नाम पूछते हैं। कृष्ण सुनने को वाजपेय के फल और पाप-क्षय से जोड़कर द्वापर के आरम्भ में माहिष्मती के राजा महीजित की कथा कहते हैं। राजा पुत्र न होने से दुखी हैं और बहुत समय बीतने पर वृद्ध होते हुए चिंतित हो जाते हैं। पाठ का पुत्रहीन जीवन में सुख न होने का कथन उसका प्राचीन सामाजिक दृष्टिकोण है, किसी परिवार के मूल्य का निर्णय नहीं।

राजा प्रजा से कहते हैं कि उन्होंने इस जन्म में पाप, अन्याय से धन-संग्रह, ब्राह्मण या देवता का धन लेना और किसी की धरोहर हड़पना नहीं किया। उन्होंने प्रजा को पुत्रों की तरह पाला, धर्म से राज्य प्राप्त किया, दुष्टों को संबंधी होने पर भी दंड दिया और सज्जनों का सम्मान किया, किसी से द्वेष नहीं किया। वे पूछते हैं कि फिर पुत्र क्यों नहीं हुआ।

द्विज, पुरोहित और प्रजा विचार करके वन के आश्रमों में जाते हैं। उन्हें लोमश मिलते हैं, जिन्हें पाठ प्राचीन, दीर्घजीवी, रोगरहित, निराहार तपस्वी, आत्मसंयमी, क्रोध-विजयी, धर्म और शास्त्रों के ज्ञाता तथा ब्रह्मा के समान बताता है। प्रत्येक कल्प में एक रोम गिरने से उनका नाम लोमश और त्रिकालज्ञान की प्रशंसा आती है। लोग प्रसन्न होकर प्रणाम करते हैं और भेंट को सौभाग्य कहते हैं। तपस्या का वर्णन पाठक को भोजन या उपचार छोड़ने का निर्देश नहीं।

Yudhishthira asks Madhusudana about Shravana's bright Ekadashi. Krishna connects hearing with Vajapeya merit and release from sin, then tells of Mahijit, king of Mahishmati at Dvapara's beginning. Distressed at having no son, the king grows older as time passes. The text's assertion that sonless life lacks happiness reflects its ancient social outlook, not a judgment of a family's worth.

The king says he has not sinned in this life, amassed unjust wealth, taken a Brahmin's or deity's property, or appropriated a deposit. He has cared for subjects as sons, gained his kingdom righteously, punished wrongdoers even when related, honoured good people and hated none. He asks why no son has been born.

Dvijas, the priest and subjects consult and visit forest hermitages. They meet Lomasha, described as ancient, long-lived, free of illness, fasting in austerity, self-controlled, without anger, learned in dharma and scripture, and comparable to Brahma. One hair falls each kalpa, explaining his name; knowledge of three times is praised. The delighted visitors bow and call the meeting fortunate. This description does not tell readers to abandon food or treatment.

पूर्वजन्म का प्रसंग और कथा का परिणाम

KATHA 6.55.18–35

लोमश आने का कारण पूछते हैं और परोपकार को अपने जन्म का उद्देश्य बताते हैं। लोग संशय दूर करने की इच्छा, मुनि की ब्रह्मा से जुड़ी श्रेष्ठता की प्रशंसा और राजा द्वारा पुत्रों की तरह पालन का उल्लेख करते हैं। राजा का दुख उनका दुख है; वे तप करने आये हैं और पुत्र पाने का मार्ग पूछते हैं। मुनि थोड़ी देर ध्यान कर पूर्वजन्म बताते हैं।

उस जन्म में राजा निर्धन वैश्य व्यापारी थे, जिन्हें कथा निर्दय कर्म करने वाला कहती है। ज्येष्ठ शुक्ल दशमी में सूर्य मध्य आकाश में होने पर वे गाँव की सीमा के जलाशय में पानी पीना चाहते हैं। वहाँ बछड़े सहित गर्मी और प्यास से व्याकुल गाय पानी पीती है। व्यापारी उसे रोककर स्वयं पीते हैं। लोमश इस कर्म को पुत्र न होने से और किसी जन्म के पुण्य को बाधारहित राज्य से जोड़ते हैं। जलाशय और कूपिका के शब्द रखे गये हैं; उसका आधुनिक भूगोल नहीं बनाया गया।

लोग पुण्य से पाप मिटने का मार्ग पूछते हैं। लोमश श्रावण शुक्ल पुत्रदा का व्रत बताते हैं। लोग प्रणाम करके नगर लौटते हैं, जागरण सहित पालन करते हैं और पुण्य राजा को देते हैं। कथा में रानी गर्भ धारण करती हैं और प्रसव होने पर शक्तिशाली पुत्र जन्मता है।

पूर्वजन्म और जन्म का परिणाम धार्मिक कथा हैं, प्रजनन की चिकित्सा या पुत्र पाने का वादा नहीं। संतान न होना नैतिक दोष नहीं और किसी बच्चे का मूल्य लिंग पर निर्भर नहीं। किसी पर गर्भ, व्रत या जागरण का दबाव न डालें; भोजन, पानी, विश्राम और आवश्यक चिकित्सा जारी रखें।

Lomasha asks why they have come and describes helping others as his life's purpose. The visitors seek resolution of their doubt, praise his greatness in relation to Brahma and explain the king's care for them as sons. Sharing his sorrow, they have come for austerity and ask how he may have a son. After brief meditation the sage recounts a former birth.

The king then was a poor Vaishya trader, described as acting cruelly. At Jyeshtha's bright Dashami, with the sun midway in the sky, he wished to drink at a water reservoir on a village boundary. A cow with her calf was drinking, distressed by heat and thirst. He stopped her and drank himself. Lomasha links this deed with having no son and merit in some birth with the unobstructed kingdom. Reservoir and kupika terms remain without inventing modern geography.

The visitors ask how merit may remove sin. Lomasha recommends Shravana's bright Putrada vow. They bow, return, observe with a vigil and give the merit to the king. Within the story the queen conceives and delivers a strong son.

Past-life explanation and birth outcome are religious narrative, not fertility treatment or a promise of a son. Childlessness is not moral fault, and no child's worth depends on gender. Do not pressure anyone into pregnancy, fasting or vigils; food, water, rest and necessary care continue.

पवित्रारोपण और पूरा अध्याय-समापन

KATHA 6.55.36–44

कथा के बाद चर्चा श्रावण शुक्ल द्वादशी में सूर्य के कर्क में होने पर वासुदेव के पवित्रारोपण की ओर जाती है। सोना, चाँदी, ताँबा, क्षौम, कौशेय और पद्मज सूत्र, कुश, काश तथा ब्राह्मणी द्वारा तैयार कपास का उल्लेख है। सामग्री के पुराने शब्दों को अनिवार्य खरीद-सूची में नहीं बदला गया। स्नान, सूत्र का तिगुना करना और फिर तिगुना करके शुद्धि, पिछले दिन गोदोहांतरित समय में अधिवासन, द्विजों और गुरु के चरणों को प्रणाम तथा मंगलगीतों के साथ जागरण आता है। इन तकनीकी शब्दों से घरेलू विधि या घड़ी का समय नहीं निकाला गया।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, भिल्ल और शूद्र का उल्लेख करके अपने धर्म में स्थित लोगों द्वारा भक्ति से पवित्रक बनाने, गुरु को देने तथा वैष्णव द्विजों का गंध और फूल से सम्मान करने की चर्चा है। पाठ द्विज के लिए ‘अतो देव’ से पहचाना मंत्र और शूद्र के लिए मूलमंत्र का भेद कहता है; विष्णु की तरह शिव में भी विधान का उल्लेख है। मंत्र अलग निकालकर जपने का निर्देश यहाँ नहीं दिया गया और प्राचीन सामाजिक वर्ग पूजा-अधिकार का आधुनिक माप नहीं हैं।

प्रतिवर्ष पालन को भोग और मुक्ति की इच्छा से जोड़ा जाता है। न करने पर वार्षिक वैष्णव पूजा निष्फल होने का कठोर कथन भी है। अन्त में माहात्म्य सुनने से पाप-क्षय, पुत्र-सुख और स्वर्ग की प्रशंसा आती है। ये स्रोत के धार्मिक वचन हैं, पूजा को व्यर्थ घोषित करने, परिवार को डराने या परिणाम की गारंटी का आधार नहीं।

अलग समापन-वाक्य अध्याय 55 को उत्तरखण्ड के उमापति–नारद संवाद में श्रावण शुक्ल पवित्रारोपणी पुत्रदा नाम देता है; तत्काल प्रश्नोत्तर कृष्ण–युधिष्ठिर है। सभी 44 क्रमांकित स्थान और समापन का आशय इस संक्षिप्त मौलिक पुनर्कथन में पूरा है। यह संस्कृत का अक्षरशः पाठ, सार्वभौम संस्कार-विधि या पौष पुत्रदा की कथा नहीं; इससे किसी वर्ष का समारोह-दिन नहीं निकाला गया।

After the story, discussion turns to Vasudeva's pavitraropana on Shravana's bright Dwadashi with the sun in Cancer. Gold, silver, copper, kshauma, kausheya and padmaja threads, kusha, kasha and cotton prepared by a Brahmin woman are mentioned. Old material terms are not turned into compulsory shopping. Bathing, tripling the thread and tripling again for purification, previous-day consecration at godohantara, bowing to dvijas and the teacher, and a vigil with auspicious songs follow. These technical terms do not establish a household procedure or clock time.

Brahmins, Kshatriyas, Vaishyas, Bhillas and Shudras are named in a discussion of devotees following their practices, making pavitraka, giving it to the teacher and honouring Vaishnava dvijas with fragrance and flowers. The text distinguishes a mantra identified by Ato Deva for dvijas from a root mantra for Shudras, and mentions Shiva as well as Vishnu. No isolated formula is prescribed here; ancient social categories do not determine present-day access to worship.

Yearly performance is linked with enjoyment and liberation. A harsh assertion says omission renders annual Vaishnava worship fruitless. The close praises hearing as releasing sin, bringing happiness from a son and heaven. These are religious statements, not grounds to invalidate anyone's worship, frighten families or

guarantee results.

The separate colophon names chapter 55 as Shravana's bright Pavitraropani Putrada in the Uttara section's Umapati–Narada dialogue; the immediate exchange is Krishna–Yudhishthira. All 44 numbered positions and closing statement are covered in this condensed original retelling. It is not verbatim Sanskrit, a universal consecration manual or Pausha Putrada's story; no annual ceremony date is calculated.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Shravana Putrada Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.55.1–44, revision 336436, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, full Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement implied. This licence covers the retelling and its language layers, not unrelated code or site content. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.